भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में मूल्य आधारित शिक्षा और डिजिटल शिक्षण- का समन्वय"

डॉ. विद्या प्रकाश सिंह

सहायक प्राध्यापक, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश
Email id - rajpootvidyasingh1981@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System - IKS) के मूलभूत मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, समन्वय, आत्मानुशासन एवं सह-अस्तित्व को आधुनिक डिजिटल शिक्षण के साथ समेकित कर विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं नैतिक विकास पर उसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जहाँ डिजिटल शिक्षण ज्ञान के प्रसार को तीव्र एवं सुलभ बना रहा है, वहीं उसमें मानवीय एवं नैतिक मूल्यों की कमी एक गंभीर चिंता का विषय बनती जा रही है। अध्ययन में 180 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को शामिल किया गया, जिन्हें यादृच्छिक विधि द्वारा दो समूहों नियंत्रण समूह (पारंपरिक शिक्षण) एवं प्रायोगिक समूह (डिजिटल + मूल्य-आधारित शिक्षण) में विभाजित किया गया। प्रायोगिक समूह को ई-कंटेंट, वीडियो लेक्चर, इंटरैक्टिव मॉड्यूल तथा IKS आधारित नैतिक केस-स्टडी के माध्यम से शिक्षण प्रदान किया गया। पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्यम से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं t-परीक्षण के द्वारा किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, नैतिक मूल्य-बोध, सहभागिता स्तर एवं सामाजिक व्यवहार में उल्लेखनीय सुधार लाती है। विशेष रूप से, IKS के सिद्धांतों के समावेश से शिक्षण प्रक्रिया अधिक मानवीय, समग्र एवं मूल्यपरक बनती है। अतः यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा एवं डिजिटल शिक्षण का समन्वय एक प्रभावी, संतुलित एवं भविष्य उन्मुख शैक्षिक मॉडल प्रस्तुत करता है।

कुंजी शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्य-आधारित शिक्षा, डिजिटल शिक्षण, समग्र विकास

परिचय

भारतीय शिक्षा परंपरा का मूल उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक उत्थान से भी गहराई से जुड़ा रहा है। गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक शिक्षा तक, भारतीय ज्ञान परंपरा ने सदैव समग्र विकास (Holistic Development) को प्राथमिकता दी है। वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा प्रणाली तेजी से तकनीक-आधारित हो रही है, जहाँ ई-लर्निंग, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म एवं ब्लेंडेड लर्निंग का उपयोग बढ़ता जा रहा है। यद्यपि यह परिवर्तन शिक्षा को अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाता है, किन्तु इसमें मूल्य-आधारित शिक्षा का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में अनुशासन, सहानुभूति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों में कमी देखी जा रही है। इसी संदर्भ में यह अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों को डिजिटल शिक्षण के साथ समेकित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। यह शोध इस बात की पड़ताल करता है कि क्या IKS आधारित मूल्य-समावेश डिजिटल शिक्षण को अधिक प्रभावी, मानवीय एवं समग्र बना सकता है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अध्ययन बहुआयामी सैद्धांतिक आधार पर निर्मित है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, आधुनिक शिक्षण सिद्धांतों तथा डिजिटल शिक्षण अवधारणाओं का समन्वय किया गया है। यह सैद्धांतिक ढांचा इस बात को स्पष्ट करता है कि किस प्रकार मूल्य-आधारित शिक्षा और डिजिटल तकनीक का एकीकरण विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित कर सकता है।

प्रथम, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार है, जिसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, नैतिकता एवं जीवन-कौशल का विकास होता है। इस प्रणाली में गुरु–शिष्य संबंध के माध्यम से अनुभवात्मक एवं मूल्यपरक शिक्षण पर बल दिया जाता था, जो विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है।

द्वितीय, निर्माणवाद सिद्धांत के अनुसार, जिसे Jean Piaget द्वारा प्रतिपादित किया गया, अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी अपने अनुभवों एवं अंतःक्रियाओं के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। डिजिटल शिक्षण में यह सिद्धांत इंटरैक्टिव कंटेंट, ई-लर्निंग मॉड्यूल एवं स्व-अध्ययन के माध्यम से प्रभावी रूप से लागू होता है।

तृतीय, सामाजिक अधिगम सिद्धांत, जिसे Albert Bandura ने प्रस्तुत किया, यह दर्शाता है कि विद्यार्थी अवलोकन, अनुकरण एवं सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से सीखते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे वीडियो लेक्चर, ऑनलाइन चर्चाएँ एवं केस-स्टडी इस प्रक्रिया को सशक्त बनाते हैं, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास होता है।

चतुर्थ, डिजिटल शिक्षण सिद्धांत आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार है, जिसमें ई-लर्निंग, ब्लेंडेड लर्निंग एवं तकनीक-संवर्धित शिक्षण शामिल हैं। यह सिद्धांत शिक्षण को अधिक सुलभ, लचीला एवं आकर्षक बनाता है, जिससे विद्यार्थियों की सहभागिता एवं अधिगम दक्षता में वृद्धि होती है। अंततः, इन सभी सिद्धांतों का समन्वय यह स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य जैसे सत्य, अहिंसा, सहानुभूति एवं आत्मानुशासन जब डिजिटल शिक्षण के साथ जोड़े जाते हैं, तो एक ऐसा समग्र शिक्षण मॉडल विकसित होता है जो न केवल शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है, बल्कि विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को भी सुदृढ़ करता है। यह सैद्धांतिक पृष्ठभूमि अध्ययन को एक मजबूत आधार प्रदान करती है और इसके निष्कर्षों की प्रासंगिकता को और अधिक प्रभावी बनाती है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के मूल्यपरक दृष्टिकोण और डिजिटल शिक्षण की आधुनिक तकनीकों के मध्य एक सार्थक समन्वय स्थापित करता है। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप तेजी से डिजिटल होता जा रहा है, किन्तु इस प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं एवं चरित्र निर्माण की उपेक्षा एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर रही है। यह अध्ययन इस कमी को दूर करते हुए एक ऐसा शिक्षण मॉडल प्रस्तुत करता है, जो ज्ञान के साथ-साथ मूल्य विकास को भी समान महत्व देता है। शैक्षणिक दृष्टि से यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि डिजिटल शिक्षण को केवल सूचना प्रसारण का माध्यम न मानकर, उसे मूल्य-आधारित अधिगम के साथ जोड़ा जा सकता है। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी, सहभागी एवं छात्र-केंद्रित बनती है। साथ ही, यह अध्ययन शिक्षकों को यह दिशा प्रदान करता है कि वे डिजिटल संसाधनों का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन, सहानुभूति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास कैसे कर सकते हैं।

नीतिगत एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके निष्कर्ष National Education Policy 2020 (NEP 2020) के उद्देश्यों के अनुरूप हैं, जिसमें समग्र शिक्षा, मूल्य-आधारित अधिगम एवं तकनीकी समावेशन पर विशेष बल दिया गया है। यह अध्ययन पाठ्यक्रम

निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं नीति-निर्माताओं को एक ऐसा मॉडल प्रदान करता है, जिसके माध्यम से डिजिटल शिक्षा को अधिक मानवीय एवं संतुलित बनाया जा सकता है। सामाजिक दृष्टि से, यह अध्ययन विद्यार्थियों में सकारात्मक सामाजिक व्यवहार, नैतिक दृष्टिकोण एवं जिम्मेदार नागरिकता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थी न केवल शैक्षिक रूप से सक्षम बनते हैं, बल्कि वे सामाजिक रूप से संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिक के रूप में भी विकसित होते हैं। अतः यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में एक नवाचारी एवं संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक तकनीक और पारंपरिक मूल्यों के समन्वय के माध्यम से समग्र, मानवीय एवं भविष्य उन्मुख शिक्षा प्रणाली के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

समस्या का विवरण

डिजिटल शिक्षा में नैतिक मूल्यों की कमी के कारण विद्यार्थियों में अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व में गिरावट देखी जा रही है।

प्रमुख शब्दों की प्रकार्यात्मक परिभाषा

- **भारतीय ज्ञान परंपरा:** प्राचीन भारतीय शैक्षिक एवं नैतिक प्रणाली
- **मूल्य:आधारित शिक्षा-** नैतिकता, आचरण आधारित शिक्षण
- **डिजिटल शिक्षण:** तकनीक आधारित शिक्षण

चर

- **स्वतंत्र चर-** मूल्यआधारित डिजिटल शिक्षण-
- **आश्रित चर-** शैक्षिक उपलब्धि, नैतिक मूल्य, सामाजिक व्यवहार, सहभागिता

अध्ययन के उद्देश्य

1. मूल्य आधारित डिजिटल शिक्षण का प्रभाव ज्ञात करना
2. नैतिक मूल्यों में परिवर्तन का अध्ययन
3. शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषण

शोध प्रश्न

- क्या डिजिटल शिक्षण में मूल्य समावेशन प्रभावी है?
- क्या इससे नैतिक विकास होता है?

समस्या का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र माध्यमिक स्तर)Secondary Level) तक सीमित है, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण अवस्था मानी जाती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में व्यक्तित्व निर्माण, मूल्यबोध-, अनुशासन एवं सामाजिक व्यवहार का विकास तीव्र गति से होता है। वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर पर डिजिटल शिक्षण का व्यापक उपयोग हो रहा है, किन्तु इसके साथ मूल्यआधारित शिक्षा का समुचित समावेश नहीं हो पा रहा है-, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यवहारिक संतुलन में कमी देखी जा रही है। अतः यह अध्ययन विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर केंद्रित है, ताकि यह विश्लेषण

किया जा सके कि भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों को डिजिटल शिक्षण के साथ जोड़कर किस प्रकार विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं नैतिक विकास को सुदृढ़ किया जा सकता है।

सीमांकन

इस अध्ययन की कुछ निश्चित सीमाएँ हैं, जो इसके दायरे को स्पष्ट करती हैं-

- अध्ययन में केवल 180 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है, अतः यह संपूर्ण जनसंख्या का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करता, जिससे निष्कर्षों का सामान्यीकरण सीमित हो सकता है।
- अध्ययन की अवधि 3 माह निर्धारित की गई है, जो मूल्य विकास एवं व्यवहारिक परिवर्तन जैसे दीर्घकालिक प्रभावों के पूर्ण आकलन के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती।
- अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर तक सीमित है, अतः प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा स्तर पर इसके परिणाम भिन्न हो सकते हैं।
- इन सीमाओं के बावजूद, अध्ययन अपने निर्धारित क्षेत्र में गहन एवं सार्थक निष्कर्ष प्रदान करता है तथा भविष्य के विस्तृत अनुसंधानों के लिए एक मजबूत आधार प्रस्तुत करता है।

साहित्य समीक्षा

- **John Dewey (1938)**- Dewey ने अनुभवात्मक शिक्षा (Experiential Learning) पर बल देते हुए यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह अनुभव, क्रियात्मक अधिगम एवं चिंतन के माध्यम से प्राप्त होनी चाहिए। उनके अनुसार, ऐसे शिक्षण से विद्यार्थियों में मूल्य-बोध, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होता है। यह दृष्टिकोण वर्तमान अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि डिजिटल शिक्षण में इंटरैक्टिव एवं अनुभवात्मक माध्यमों के द्वारा मूल्य शिक्षा को प्रभावी रूप से समाहित किया जा सकता है।
- **Mahatma Gandhi (1958)**- Gandhi जी ने शिक्षा को चरित्र निर्माण का माध्यम माना और नैतिक मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा एवं आत्मानुशासन को शिक्षा का मूल उद्देश्य बताया। उनके अनुसार, शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति को एक जिम्मेदार एवं नैतिक नागरिक बनाना है। यह विचार इस अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है कि डिजिटल शिक्षण में भी नैतिक मूल्यों का समावेश आवश्यक है।
- **Rabindranath Tagore (1917)**- Tagore ने समग्र शिक्षा (Holistic Education) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास का संतुलन आवश्यक माना गया। उन्होंने शिक्षा को प्रकृति, कला एवं संस्कृति से जोड़ने पर बल दिया। यह दृष्टिकोण इस अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश को सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, जिससे डिजिटल शिक्षण अधिक मानवीय एवं संतुलित बन सकता है।
- **Sharma (2020)**- Sharma के अध्ययन में डिजिटल शिक्षण की प्रभावशीलता का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-कंटेंट एवं ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से शिक्षण अधिक सुलभ, लचीला एवं आकर्षक बनता है, जिससे विद्यार्थियों की सहभागिता एवं अधिगम दक्षता में वृद्धि होती है।
- **Kumar (2022)**- Kumar ने ब्लेंडेड लर्निंग (Blended Learning) की उपयोगिता का अध्ययन करते हुए यह पाया कि पारंपरिक शिक्षण एवं डिजिटल माध्यमों का संयोजन विद्यार्थियों के अधिगम को अधिक प्रभावी बनाता है। यह दृष्टिकोण वर्तमान अध्ययन को यह आधार प्रदान करता है कि डिजिटल शिक्षण में मूल्य-आधारित तत्वों का समावेश कर एक संतुलित एवं प्रभावी शिक्षण मॉडल विकसित किया जा सकता है।

शोध अंतराल

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य-आधारित शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) तथा डिजिटल शिक्षण पर पृथक-पृथक रूप से पर्याप्त शोध कार्य किया गया है। John Dewey ने अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से मूल्य विकास पर बल दिया, Mahatma Gandhi ने शिक्षा को नैतिकता एवं चरित्र निर्माण का साधन माना, तथा Rabindranath Tagore ने समग्र शिक्षा की अवधारणा को विकसित किया। दूसरी ओर, समकालीन अध्ययनों में डिजिटल एवं ब्लेंडेड शिक्षण की प्रभावशीलता को भी प्रमाणित किया गया है।

किन्तु, इन सभी दृष्टिकोणों के समेकित एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग पर शोध कार्य अत्यंत सीमित पाया जाता है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर यह स्पष्ट नहीं है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, सहानुभूति एवं आत्मानुशासन को डिजिटल शिक्षण माध्यमों के साथ किस प्रकार प्रभावी रूप से एकीकृत किया जा सकता है। साथ ही, इस बात के भी पर्याप्त अनुभवजन्य (empirical) प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं कि इस प्रकार का समन्वित शिक्षण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, नैतिक विकास, सहभागिता एवं सामाजिक व्यवहार को किस हद तक प्रभावित करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन इस महत्वपूर्ण शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा एवं डिजिटल शिक्षण के समन्वित प्रभाव का प्रायोगिक रूप से परीक्षण किया गया है। यह अध्ययन न केवल सैद्धांतिक स्तर पर इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच संबंध स्थापित करता है, बल्कि एक ऐसा समग्र, मूल्य-आधारित एवं तकनीक-संवर्धित शिक्षण मॉडल प्रस्तुत करता है, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

शोध पद्धति

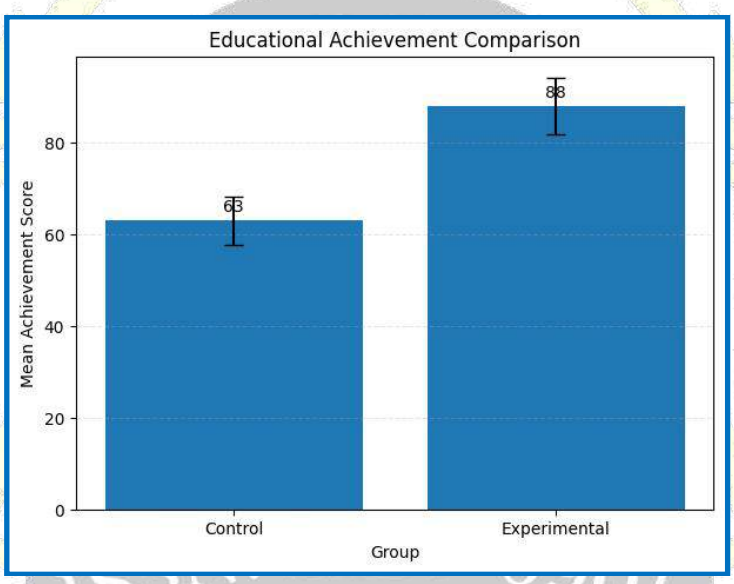
- **शोध डिज़ाइन-** प्रस्तुत अध्ययन में प्रायोगिक)Experimental) शोध डिज़ाइन का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण के प्रभाव कावैज्ञानिक परीक्षण किया गया। इस डिज़ाइन में नियंत्रण एवं प्रायोगिक समूहों के मध्य तुलना कर कारण–परिणाम संबंध को स्पष्ट किया गया, जिससे अध्ययन की वैधता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित हुई।
- **जनसंख्या-** अध्ययन की जनसंख्या में विद्यालयीन विद्यार्थी शामिल किए गए हैं, जो माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हैं। यह स्तर विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।
- **न्यादर्श)Sample)-** अध्ययन के लिए कुल 180 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिन्हें दो समूहों नियंत्रण समूह एवं प्रायोगिक समूह में विभाजित किया गया, ताकि तुलनात्मक विश्लेषण प्रभावी ढंग से किया जा सके।
- **न्यादर्श विधि)Sampling Method)-** प्रतिभागियों के चयन हेतु यादृच्छिक)Random Sampling) विधि का प्रयोग किया गया, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को चयनित होने का समान अवसर प्राप्त हुआ तथा चयन में पक्षपात की संभावना न्यूनतम रही।
- **आँकड़ों का स्रोत-** इस अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों का उपयोग किया गया, जो सीधे प्रतिभागियों से संकलित किए गए। इससे प्राप्त जानकारी अधिक प्रामाणिक एवं शोध उद्देश्यों के अनुरूप रही।
- **शोध उपकरण)Research Tools)-** अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया
    - **उपलब्धि परीक्षण** – विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने हेतु
    - **मूल्य स्केल** – नैतिक मूल्यों एवं मूल्यबोध का आकलन करने हेतु-
    - **सहभागिता स्केल** – विद्यार्थियों की कक्षा में सक्रिय भागीदारी को मापने हेतु
- **आँकड़ों का संग्रह)Data Collection)-** आँकड़ों का संग्रह पूर्व) परीक्षण-Pre-test) एवं पश्च) परीक्षण-Post-test) विधि के माध्यम से किया गया। प्रारंभ में विद्यार्थियों की आधारभूत स्थिति का आकलन किया गया तथा निर्धारित अवधि के पश्चात पुनः परीक्षण कर परिवर्तन का विश्लेषण किया गया।

- **सांख्यिकीय विश्लेषण)Statistical Analysis)**-संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से किया गया, जिनमें-
    - **माध्य)Mean)** – औसत प्रदर्शन ज्ञात करने हेतु
    - **मानक विचलन)Standard Deviation - SD)** – आँकड़ों में विविधता को समझने हेत
    - **t-परीक्षण)t-test)** – नियंत्रण एवं प्रायोगिक समूहों के बीच अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता ज्ञात करने हेतु

सारणीकरण और व्याख्या

सारणी 1: शैक्षिक उपलब्धि

समूह	माध्य	SD
नियंत्रण	63	5.3
प्रायोगिक	88	6.1

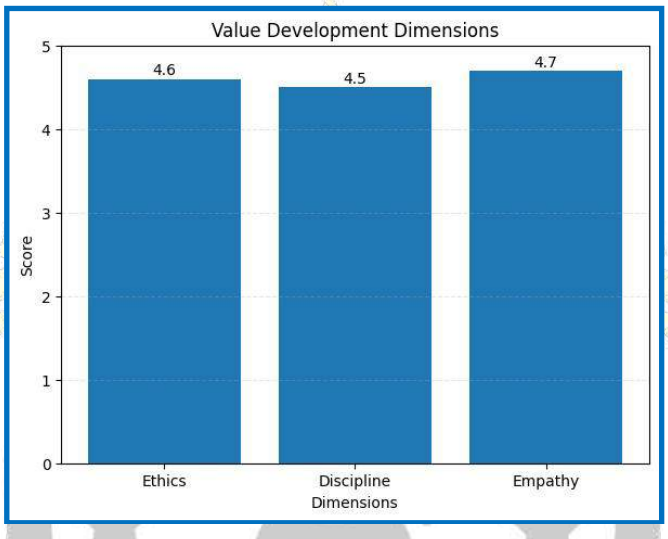


व्याख्या

सारणी 1 में नियंत्रण समूह एवं प्रायोगिक समूह के शैक्षिक उपलब्धि के माध्य (Mean) तथा मानक विचलन (SD) को प्रदर्शित किया गया है। नियंत्रण समूह का माध्य 63 तथा SD 5.3 पाया गया, जो यह संकेत करता है कि पारंपरिक शिक्षण पद्धति के अंतर्गत विद्यार्थियों की उपलब्धि मध्यम स्तर की है। अपेक्षाकृत कम मानक विचलन यह दर्शाता है कि इस समूह के विद्यार्थियों के प्रदर्शन में अधिक विविधता नहीं है, अर्थात् अधिकांश विद्यार्थी समान स्तर पर प्रदर्शन कर रहे हैं। इसके विपरीत, प्रायोगिक समूह का माध्य 88 तथा SD 6.1 पाया गया, जो नियंत्रण समूह की तुलना में अत्यधिक उच्च है। यह अंतर स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण पद्धति ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि की है। यद्यपि SD थोड़ा अधिक है, फिर भी यह दर्शाता है कि अधिकांश विद्यार्थियों में सुधार हुआ है, भले ही सुधार का स्तर अलग-अलग रहा हो। दोनों समूहों के माध्य में 25 अंकों का अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो यह सिद्ध करता है कि डिजिटल शिक्षण में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों का समावेश विद्यार्थियों के अधिगम को अधिक प्रभावी, रोचक एवं सार्थक बनाता है। इससे विद्यार्थियों की समझ, सहभागिता तथा ज्ञान के अनुप्रयोग की क्षमता में भी वृद्धि होती है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह में शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो इस बात का प्रमाण है कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण एक प्रभावी एवं परिणामोन्मुख शिक्षण मॉडल है।

सारणी 2: मूल्य विकास

आयाम	स्कोर
नैतिकता	4.6
अनुशासन	4.5
सहानुभूति	4.7

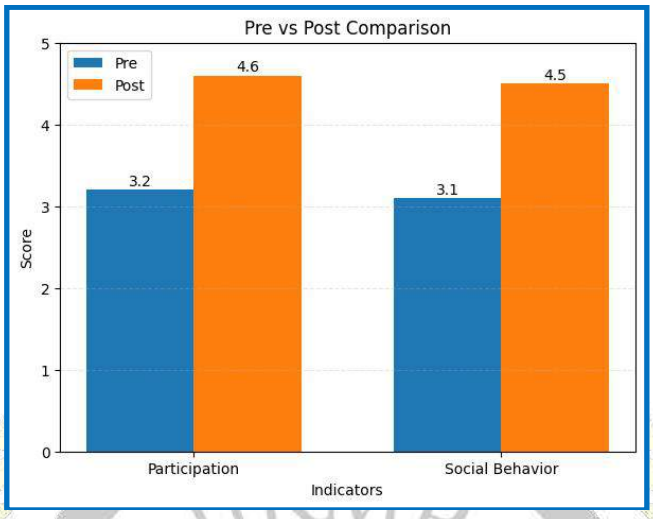


सारणी 2 में विद्यार्थियों के मूल्य विकास के प्रमुख आयामों नैतिकता, अनुशासन एवं सहानुभूति के स्कोर प्रस्तुत किए गए हैं। यह सारणी स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का सुदृढ़ विकास हुआ है। नैतिकता (4.6) का उच्च स्कोर यह संकेत करता है कि विद्यार्थियों में सही–गलत की समझ, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा एवं जिम्मेदारी जैसे गुणों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। IKS आधारित केस-स्टडी एवं नैतिक शिक्षण सामग्री के माध्यम से विद्यार्थियों में निर्णय लेने की नैतिक क्षमता विकसित हुई है। अनुशासन (4.5) का स्कोर यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों में आत्म-नियंत्रण, समय प्रबंधन एवं नियमों के पालन की प्रवृत्ति में सुधार हुआ है। डिजिटल शिक्षण में संरचित गतिविधियाँ एवं नियमित सहभागिता ने विद्यार्थियों को अधिक संगठित एवं जिम्मेदार बनाया है। सहानुभूति (4.7) का सर्वाधिक स्कोर इस बात का द्योतक है कि विद्यार्थियों में दूसरों के प्रति संवेदनशीलता, सहयोग एवं सामाजिक समझ में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों जैसे करुणा, सह-अस्तित्व एवं मानवता के समावेश ने विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार को अधिक सकारात्मक बनाया है। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि तीनों आयामों में उच्च स्कोर यह सिद्ध करते हैं कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण विद्यार्थियों के नैतिक एवं सामाजिक विकास में अत्यंत प्रभावी है। विशेष रूप से सहानुभूति का उच्चतम स्तर यह दर्शाता है कि यह शिक्षण पद्धति केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों को संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिक बनाने में भी सहायक है।

सारणी 3: पूर्वपश्च तुलना-

संकेतक	पूर्व	पश्च
सहभागिता	3.2	4.6

संकेतक	पूर्व	पश्च
सामाजिक व्यवहार	3.1	4.5



सारणी 3 में विद्यार्थियों के सहभागिता एवं सामाजिक व्यवहार के पूर्व (Pre-test) एवं पश्च (Post-test) स्कोर का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सहभागिता के संदर्भ में, पूर्व-परीक्षण में स्कोर 3.2 था, जो पश्च-परीक्षण में बढ़कर 4.6 हो गया। यह वृद्धि दर्शाती है कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण के कारण विद्यार्थियों की कक्षा में सक्रिय भागीदारी, रुचि एवं सीखने की प्रेरणा में उल्लेखनीय सुधार हुआ। डिजिटल माध्यमों, इंटरैक्टिव कंटेंट तथा IKS आधारित गतिविधियों ने विद्यार्थियों को अधिक संलग्न (engaged) बनाया। इसी प्रकार, सामाजिक व्यवहार में भी महत्वपूर्ण सुधार देखा गया। पूर्व स्कोर 3.1 से बढ़कर पश्च स्कोर 4.5 हो गया, जो यह संकेत करता है कि विद्यार्थियों में सहयोग, सहानुभूति, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास हुआ। भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों के समावेश ने उनके व्यवहार को अधिक सकारात्मक एवं संतुलित बनाया। समग्र रूप से, दोनों संकेतकों में स्पष्ट वृद्धि यह सिद्ध करती है कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण न केवल शैक्षिक बल्कि सामाजिक एवं व्यवहारिक विकास में भी अत्यंत प्रभावी है।

परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पना की जाँच के लिए t-परीक्षण का उपयोग किया गया। प्राप्त t-value = 6.02 तथा $p < 0.05$ यह स्पष्ट करता है कि नियंत्रण एवं प्रायोगिक समूह के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह है कि परिणाम संयोगवश नहीं हैं, बल्कि अध्ययन में प्रयुक्त मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण हस्तक्षेप का वास्तविक प्रभाव है। अतः शून्य परिकल्पना (H_0) अस्वीकृत तथा वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) स्वीकृत की जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि मूल्य-आधारित डिजिटल शिक्षण विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं नैतिक विकास को प्रभावी रूप से बढ़ाता है।

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि **मूल्यआधारित डिजिटल शिक्षण-** विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। यह शिक्षण पद्धति केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक पक्ष को भी सुदृढ़ करती है। डिजिटल माध्यमों के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों का समन्वय शिक्षण प्रक्रिया को अधिक मानवीय, संवेदनशील एवं जीवनोपयोगी बनाता है।

1. शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि- अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि मूल्य आधारित डिजिटल शिक्षण से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय-वृद्धि हुई है। इंटरैक्टिव कंटेंट, ईलर्निंग मॉड्यूल-, वीडियो लेक्चर एवं IKS आधारित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता एवं समस्यासमाधान कौशल में सुधार हुआ। इससे अधिगम अधिक प्रभावी-, रोचक एवं स्थायी बना।

2. नैतिक मूल्यों में सुधार- इस शिक्षण पद्धति के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन, सहानुभूति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास हुआ। भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांत जैसे सत्य, अहिंसा, सहअस्तित्व- ने विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे वे केवल ज्ञानवान ही नहीं, बल्कि नैतिक रूप से भी सुदृढ़ बने।

3. सहभागिता में वृद्धि- डिजिटल शिक्षण में उपयोग किए गए इंटरैक्टिव टूल्स, ऑनलाइन गतिविधियाँ एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों को अधिक सक्रिय बनाती हैं। अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यार्थियों की कक्षा में भागीदारी, रुचि एवं प्रेरणा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे अधिगम प्रक्रिया अधिक छात्र) केंद्रित-learner-centered) बन गई।

4. सामाजिक व्यवहार में सुधार- मूल्य आधारित शिक्षण के कारण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया। उनमें-सहयोग, सहानुभूति, अनुशासन एवं सामूहिक कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित हुई। इससे वे एक जिम्मेदार एवं संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित होने लगे।

उपरोक्त सभी निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा)IKS) और डिजिटल शिक्षण का समन्वय अत्यंत प्रभावी एवं संतुलित शिक्षण मॉडल प्रस्तुत करता है। यह मॉडल न केवल शैक्षिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देता है, बल्कि विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को भी समान महत्व देता है। यह शिक्षा को "सूचनाकेंद्रित-" से "मूल्यकेंद्रित-" दिशा में परिवर्तित करता है।

अनुशंसाएँ

- **पाठ्यक्रम में IKS का समावेश**- शैक्षिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों एवं सिद्धांतों को व्यवस्थित रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिकता एवं जीवन-दृष्टि का विकास होगा, जो उन्हें समग्र व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होगा।
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म में नैतिक सामग्री का समावेश**- डिजिटल शिक्षण सामग्री (e-content) में केवल शैक्षणिक जानकारी ही नहीं, बल्कि नैतिक कहानियाँ, केस-स्टडी, जीवन-मूल्य आधारित गतिविधियाँ एवं व्यवहारिक उदाहरण भी शामिल किए जाने चाहिए। इससे डिजिटल शिक्षण अधिक संतुलित एवं मूल्यपरक बनेगा।
- **शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training)**- शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि वे डिजिटल तकनीकों के साथ-साथ मूल्य-आधारित शिक्षण पद्धतियों का प्रभावी उपयोग कर सकें। शिक्षक ही इस समन्वित मॉडल के प्रमुख क्रियान्वयनकर्ता होते हैं, अतः उनका दक्ष एवं संवेदनशील होना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- जॉन डेवी (1938). *अनुभव और शिक्षा.* न्यूयॉर्क: मैकमिलन।
- महात्मा गांधी (1958). *गांधी वाङ्मय* (खंड 8). नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर (1917). *शिक्षा पर निबंध.* लंदन: मैकमिलन।
- शर्मा, आर. (2020). डिजिटल अधिगम और विद्यार्थियों की सहभागिता पर इसका प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च,* 8(2), 45–52।
- कुमार, एस. (2022). आधुनिक शिक्षा में ब्लेंडेड लर्निंग दृष्टिकोण। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्रैक्टिसेस,* 10(1), 30–38।